

संकल्पना-

मनुष्यता (पद्य)

सारांश

कवि-मैथिलीशरण गुप्त

विषयवस्तु

चित्रात्मकता

क्षुधार्त रंतिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,  
तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी।  
उशीनर क्षितीश ने स्वमांस दान भी किया,  
सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर-चर्म भी दिया।  
अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे?  
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे॥

क्षुधार्त - भूख से परेशान



करस्थ - हाथ की

परार्थ - पूरा

अस्थिजाल - हड्डियों का समूह

उशीनर क्षितीश - उशीनर देश के राजा शिबि

सहर्ष - खुशी से

शरीर चर्म - शरीर का कवच

प्रसंग - : प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में कवि ने महान पुरुषों के उदाहरण दिए हैं जिनकी महानता के कारण उन्हें याद किया जाता है।

व्याख्या - : कवि कहता है कि पौराणिक कथाएं ऐसे व्यक्तियों के उदाहरणों से भरी पड़ी हैं जिन्होंने अपना पूरा जीवन दूसरों के लिए त्याग दिया जिस कारण उन्हें आज तक याद किया जाता है। भूख से परेशान रतिदेव ने अपने हाथ की आखरी थाली भी दान कर दी थी और महर्षि दधीचि ने तो अपने पूरे शरीर की हड्डियाँ वज्र बनाने के लिए दान कर दी थी। उशीनर देश के राजा शिबि ने कबूतर की जान बचाने के लिए अपना पूरा मांस दान कर दिया था। वीर कर्ण ने अपनी खुशी से अपने शरीर का कवच दान कर दिया था। कवि कहना चाहता है कि मनुष्य इस नश्वर शरीर के लिए क्यों डरता है क्योंकि मनुष्य वही कहलाता है जो दूसरों के लिए अपने आप को त्याग देता है।



सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही;  
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।  
विरुद्धभाव बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,  
विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा ?

अहा ! वही उदार है परोपकार जो करे,  
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे॥

सहानुभूति - दया, करुणा

महाविभूति - सब से बड़ी सम्पत्ति



वशीकृता - वश में करने वाला

मही - ईश्वर

विरुद्धवाद - खिलाफ होना

प्रसंग - : प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में कवि ने महात्मा बुद्ध का उदाहरण देते हुए दया ,करुणा को सबसे बड़ा धन बताया है।

व्याख्या - : कवि कहता है कि मनुष्यों के मन में दया व करुणा का भाव होना चाहिए ,यही सबसे बड़ा धन है। स्वयं ईश्वर भी ऐसे लोगों के साथ रहते हैं । इसका सबसे बड़ा उदाहरण महात्मा बुद्ध हैं जिनसे लोगों का दुःख नहीं देखा गया तो वे लोक कल्याण के लिए दुनिया के नियमों के विरुद्ध चले गए। इसके लिए क्या पूरा संसार उनके सामने नहीं झुकता अर्थात उनके दया भाव व परोपकार के कारण आज भी उनको याद किया जाता है और उनकी पूजा की जाती है। महान उस को कहा जाता है जो परोपकार करता है वही मनुष्य ,मनुष्य कहलाता है जो मनुष्यों के लिए जीता है और मरता है।

रहो न भूल के कभी मदांघ तुच्छ वित्त में,  
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।  
अनाथ कौन है यहाँ ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,  
दयालु दीन बन्धु के बड़े विशाल हाथ हैं।  
अतीव भाग्यहीन है अधीर भाव जो करे,  
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे॥



मदांघ - घमण्ड  
तुच्छ - बेकार  
सनाथ - जिसके पास अपनों का साथ हो  
अनाथ - जिसका कोई न हो  
चित्त - मन में  
त्रिलोकनाथ - ईश्वर  
दीनबंधु - ईश्वर  
अधीर - उतावलापन

प्रसंग - : प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में कवि कहता है कि सम्पत्ति पर कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए और किसी को अनाथ नहीं समझना चाहिए क्योंकि ईश्वर सबके साथ हैं।

व्याख्या :- कवि कहता है कि भूल कर भी कभी संपत्ति या यश पर घमंड नहीं करना चाहिए। इस बात पर कभी गर्व नहीं करना चाहिए कि हमारे साथ हमारे अपनों का साथ है क्योंकि कवि कहता है कि यहाँ कौन सा व्यक्ति अनाथ है ,उस ईश्वर का साथ सब के साथ है। वह बहुत दयावान है उसका हाथ सबके ऊपर रहता है। कवि कहता है कि वह व्यक्ति भाग्यहीन है जो इस प्रकार का उतावलापन रखता है क्योंकि मनुष्य वही व्यक्ति कहलाता है जो इन सब चीजों से ऊपर उठ कर सोचता है



अनंत अंतरिक्ष में अनंत देव हैं खड़े,  
समक्ष ही स्वबाहु जो बढ़ा रहे बढ़े-बड़े।  
परस्परावलंब से उठो तथा बढ़ो सभी,  
अभी अमर्त्य-अंक में अपंक हो चढ़ो सभी।  
रहो न यां कि एक से न काम और का सरे,  
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

अनंत - जिसका कोई अंत न हो

अंतरिक्ष - आकाश

समक्ष - सामने

परस्परावलंब - एक दूसरे का सहारा

अमर्त्य -अंक -- देवता की गोद

अपंक - कलंक रहित

प्रसंग -: प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में कवि कहता है कि कलंक रहित रहने व दूसरों का सहारा बनने वाले मवषयों का देवता भी स्वागत करते हैं।



व्याख्या -: कवि कहता है कि उस कभी न समाप्त होने वाले आकाश में असंख्य देवता खड़े हैं, जो परोपकारी व दयालु मनुष्यों का सामने से खड़े होकर अपनी भुजाओं को फैलाकर स्वागत करते हैं। इसलिए दूसरों का सहारा बनो और सभी को साथ में लेकर आगे बढ़ो। कवि कहता है कि सभी कलंक रहित हो कर देवताओं की गोद में बैठो अर्थात् यदि कोई बुरा काम नहीं करोगे तो देवता तुम्हें अपनी गोद में ले लेंगे। अपने मतलब के लिए नहीं जीना चाहिए अपना और दूसरों का कल्याण व उद्धार करना चाहिए क्योंकि इस मरणशील संसार में मनुष्य वही है जो मनुष्यों का कल्याण करे व परोपकार करे।